कहानी पर चर्चा और प्रश्न

प्रभात

जिन शिक्षकों को बच्चों के साथ कहानी पर चर्चा करनी होती है, वे किसी भी कहानी के साथ चर्चा करने की क्षमता रखने लगते हैं। कहानी चाहे कोई भी हो उसे वे चर्चा से बख्शते नहीं हैं, ठीक वैसे ही जैसे कुछ समय पहले तक और कहीं-कहीं अभी भी कुछ शिक्षक कहानी को शिक्षा से नहीं बख्शना चाहते। शिक्षा के बिना क्या कहानी! आज भी एक बहुत बड़ा तबका शिक्षकों का मिल जाता है जो कहानी को जब तक किसी न किसी शिक्षा से न बांध दे, तब तक उनका मन विचलित रहता है। खाना नहीं पचता, नींद नहीं आती, बुरा हाल हो जाता है। जैसे घर में बड़ी होती बेटी के प्रेम में पड़ जाने पर पिता की हालत होती है, ऐसी कहानी को शिक्षा के पगहे से बांधे बिना कुछ शिक्षकों की हालत हो जाती है। शिक्षक प्रशिक्षणों की चर्चाओं और कृष्ण कुमार के कहानी सुनाने की जरूरत और कहानी कहां खो गई आदि लेखों को पढ़ने के बाद बड़ी मुश्किल से शिक्षकों की यह समझ बन पाती है कि ''कहानी कहने की उपयोगिता कहानी की सीख नहीं, कहने के धीरज और ढंग में है। कहानी के जरिए नैतिकता, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास और संस्कृति बच्चों को देने की बात बहुत हो चुकी और इस बात के परिणाम कोई खास नहीं निकले क्यों न अब इस बात पर जोर दिया जाए कि कहानी सुनाने लायक हो?'' (कहानी कहां खो गई, लेख में प्रोफेसर कृष्ण कुमार)[1]

कहानी में शिक्षा का पीछा छोड़ देने वाले शिक्षकों की समझ कहानी के मामले में एक कदम बढ़ी हुई समझ कही जाएगी। अब उन्हें बच्चों के साथ कहानी पर तरह-तरह की गतिविधियां और काम करने होते हैं। कहानी पर नाटक करना, कहानी को नाटक में बदलना, कहानी पर चित्र बनवाना, और भी भाषा विकास के लिए किए जाने वाले कई तरह के काम। इन्हीं में से एक काम है-कहानी पर प्रश्न बनाना और कहानी पर चर्चा करना। तो वे कहानी पर चर्चा करते हैं- कहानी में सबसे अच्छा कौन था? सबसे खराब कौन था? तुम उसकी जगह होते तो क्या करते? रामू एक अच्छा लड़का था न! हमें भी रामू की तरह नेक और ईमानदार बनना चाहिए। बताओ बनना चाहिए कि नहीं? यही बात प्रश्न बनाने के संबंध में दिखाई देती है, अगर शिक्षक ने थोड़ी मेहनत नहीं की है और बनाने के लिए प्रश्न बना दिए हैं तो बंदर और मगरमच्छ की कहानी पर इस तरह के प्रश्न बनते हैं-बंदर किसका मित्र था? मगरमच्छ किसका मित्र था? बंदर ने अपना कलेजा कहां रख दिया था? मगरमच्छ की पत्नी कहां रहती थी? मगरमच्छ की पत्नी ने मगरमच्छ से क्या कहा था? आदि। एक कहानी पर प्रश्नों की संख्या जितनी होती है, उतना भी हासिल उन प्रश्नों का नहीं होता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप किसी कहानी पर दो प्रश्न बनाते हो कि पांच कि दस? अगर सारे प्रश्न भाषा विकास की किसी एक क्षमता पर आधारित हैं तो यह उन प्रश्नों की सीमा ही कही जाएगी। प्रश्नों पर थोड़ी और चर्चा से पहले थोड़ी सी वह चर्चा जिससे इस लेख की शरुआत की गई थी कि कुछ शिक्षक किसी भी कहानी के साथ चर्चा करने की क्षमता रखने लगते हैं। उन्हें कहानी पर चर्चा करनी है तो फिर कहानी कोई भी हो वे बख्शते नहीं। यह बात कहने का उद्देश्य इस तरफ संकेत करना है कि हर कहानी की अपनी अगल

तासीर होती है, एक स्वभाव होता है। उस तासीर को, उस स्वभाव को पहचाना जाना चाहिए। जैसे लोगों की अगल-अलग तरह की प्रतिभा होती है, स्वभाव होता है। आइंस्टाइन से गांधी और प्रेमचंद से दिलीप कुमार होने की अपेक्षा करना बेमानी होगा। दिलीप कुमार से कृष्ण कुमार होने की अपेक्षा करना बदसलूकी होगी। यही बात कहानियों के बारे में है। उनका सबका अपना अलग स्वभाव, मिजाज, गुण होता है। कुछ कहानियां होती है, जिनमें भरपूर हास्य होता है, कुछ में गहरी उदासी। कुछ कहानियों में गजब का ड्रामा होता है तो कुछ में वह नहीं होता। उदाहरण के लिए रवीन्द्रनाथ टैगौर की 'तोते की शिक्षा'[2] में नाटकीय तत्व हैं, उस पर आसानी से बच्चों को नाटक करवाया जा सकता है। इसी तरह कुछ कहानियां चर्चा के लिए बेहद मुफीद होती हैं जैसे कि 'मरता क्या न करता'[3], 'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?'[4] महागिरी[5], 'हाथी की हिचकी'[6], 'मगरमच्छ और दयालु गाड़ीवान'[7], 'बताओ मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं'[8] आदि ढ़ेरों कहानियां हैं। लेकिन कुछ कहानियों में कुछ ऐसा होता है कि उन्हें पढ़ने के बाद कुछ भी कहने-सुनने का मन नहीं होता। वे हमें चुप और शांत कर देती हैं। अपने में इतना घेर लेती हैं कि हम कुछ समय उनके वातावरण से घिरे रहना चाहते हैं। उस कहानी में बसे रहना चाहते हैं, उससे बाहर नहीं निकलना चाहते। और इन कहानियों का यही गुण हमारे अंतर्मन को, हमारी संवेदनाओं को पुनर्जीवित कर रहा होता है, पुनर्सृजित कर रहा होता है। क्या यह अपने आप में एक तरह का सीखना नहीं है। सीखना हमेशा बोलकर ही, तर्क देकर ही, बहस करके ही नहीं होता। वह अपने में स्थिर होकर भी, एकाग्र होकर भी, आत्मचिंतन में लीन होकर भी होता है। प्रेमचंद की ईदगाह[9] कहानी मेरे लिए एक ऐसी ही कहानी है। विजयदान देथा की 'आशा अमरधन'[10] एक ऐसी ही कहानी है। 'पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ'[11] एक ऐसी ही कहानी है।

एक शिक्षक के नाते हमें कहानियों में छिपे इन तत्वों को पहचानने की क्षमता रखनी चाहिए कि किस कहानी में किस तरह की संभावना अधिक है। तब यह तय करना आसान हो जाएगा कि किस कहानी के जरिए भाषा विकास का क्या काम करना उपयुक्त होगा।

कहानी पर चर्चा के लिए जरूरी है कि पहले शिक्षक वे प्रश्न अच्छी तरह तैयार कर लें जिनके जरिए चर्चा को आगे बढ़ाया जाएगा। मुझे कई बार शिक्षक-प्रशिक्षणों में और बच्चों के साथ कहानी की कार्यशालाओं में कहानी पर चर्चा का अवसर मिला। कहानी पर चर्चा के लिए मेरी पसंदीदा कहानी रहती है-'महागिरी'। छोटी सी मगर बड़ी सारगर्भित कहानी है और सीबीटी से उसके इतने संस्करण आ चुके हैं कि लगता है वह बच्चों के बीच लोकप्रिय कहानी भी है। कहानी कुछ इस तरह से है-

महागिरी

महागिरी एक विशाल हाथी था। एक व्यापारी उसका मालिक था। वह अकसर महागिरी को जंगल में बड़े-बड़े लट्ठे ढोने के काम में लगाता।

शादी-ब्याह में वह महागिरी को दूल्हे की सवारी के लिए भेज देता।

जब कभी मन्दिर में कोई उत्सव होता तो वह महागिरी को जुलूस में सबसे आगे चलने के लिए भेजा करता था। एक बार गांव वाले मन्दिर में कोई उत्सव मनाना चाहते थे।

लेकिन मन्दिर में ध्वज फहराए बिना उत्सव कैसे शुरू हो सकता था। मन्दिर में ध्वज तो था, लेकिन उसे फहराने के लिए खंभा नहीं था।

इसलिए गांव वाले पास के जंगल में गए और एक ऊंचे से सागौन के पेड़ को काट गिराया। उन्होंने पेड़ के तने से एक खंभा तैयार किया।

खंभा काफी लंबा और भारी था। गांव वाले उसे उठा नहीं पाए। इसलिए इसे मन्दिर तक उठाकर लाने के लिए महागिरी को लाया गया।

गांव वालों ने मन्दिर के सामने एक गढ्ढा खोदा। वे चाहते थे कि महागिरी खंभे को इस गढ्ढे में गाड़ दे। महागिरी गढ्ढे तक ले गया। तभी अचानक वह रुका और एकदम पीछे हट गया।

महावत ने महागिरी को खंभा गढ्ढे में गाड़ने के लिये हांका। परन्तु हाथी अपनी जगह से न हिला। महावत ने उसे डंडे से पीटा। फिर भी महागिरी अपनी जगह से नहीं हिला। उसे पीटते-पीटते महावत का डंडा टूट गया।

यह देख लोगों को बहुत गुस्सा आया। वे महावत को बुरा-भला कहने लगे कि वह एक निकम्मा महावत है। यह सब सुनकर महावत को गुस्सा आ गया।

उसने अपना छुरा निकाला और महागिरी की गर्दन पर कई वार किए। महागिरी दर्द के मारे तिलमिला उठा। उसने खंभे को दूर फेंक दिया।

महागिरी ने चिंघाड़ कर जोर से झटका दिया। जिससे महावत दूर जा गिरा। यह देख लोग बहुत डर गए। उन्होंने सोचा कि हाथी पागल हो गया है। वे सब वहां से भाग खड़े हुए। महागिरी अब वहां अकेला था।

वह गढ्ढे के पास आया और घुटनों के बल बैठ गया। फिर उसने अपनी लम्बी सूंड गढ्ढे में डाली तथा वहां से कोई चीज निकाली।

और उसे धीरे से जमीन पर रख दिया। यह एक छोटी सी बिल्ली थी। वह गढ्ढे में छिपी बैठी थी। गांववाले दूर खड़े महागिरी की हरकत देख रहे थे।

अब उनकी समझ में आया कि महागिरी महावत का आदेश क्यों नहीं मान रहा था। विशाल हाथी उस छोटी-सी बिल्ली को चोट नहीं पहुंचाना चाहता था।

अब लोग खुशी से महागिरी की तरफ दौड़े।

महागिरी ने तब लकड़ी के भारी खंभे को उठाया और उसे गढ्ढे में टिका दिया। वह उसे अपनी सूंड से पकड़े रहा ताकि लोग गढ्ढे में मिट्टी भर दें।

लोगों ने महागिरी को बड़े प्यार से थपथपाया। वे उसके लिए बहुत सारी मिठाई और फल लेकर आए। उन्हें इस बात का दुख था कि बेकार ही महागिरी को इतनी चोट पहुंचाई।

उस दिन से महागिरी सबका चहेता बन गया। बच्चे उसे बहुत प्यार करते और जब कभी व्यापारी बच्चों को महागिरी पर मुफ्त सवारी करने देता तो वे बहुत ही खुश होते।

लेखिका : हेमलता, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

सीबीटी से पहली बार 1965 में प्रकाशित हुई इस कहानी के 2014 तक इक्कीस संस्करण निकल चुके हैं। तीन बार ऐसा हुआ जब एक ही साल में दो-दो संस्करण निकले। पुलक विश्वास के कमाल के चित्रों से सजी 16+4 पेज की यह सुन्दर-सी पिक्चर बुक है। जब मुझे इस कहानी पर चर्चा करनी होती है, मैं सबसे पहले इसका कवर दिखाते हुए कहता हूं कि अब मैं आपके बीच जो कहानी सुनाने जा रहा हूं उसका नाम है-महागिरी। मित्रो, महागिरी एक हाथी का नाम है, जिसे एक महावत चलाता था। जैसे इक्का चलाने वाले को इक्कावान और हवाईजहाज चलाने को पायलट कहते हैं, ऐसे ही हाथी को चलाने वाले को महावत कहते हैं। इतनी भर भूमिका के बाद इस कहानी के दो-दो पृष्ठों को एक साथ खोलते हुए पहले उनमें जो पंक्तियां लिखी हैं, उन्हें शब्दशः भाषाई उतार-चढ़ाव के साथ सुनाना और उसके बाद पूरे समूह को दोनों पृष्ठों के चित्र दूर से ही दिखाना। इस तरह आठ बार में कहानी पूरी हो जाती है। कहानी सबको अच्छी तरह समझ में आ जाती है। कहानी इतनी सरल है कि मुझे लगता है जितना सुनाया गया है, उससे कुछ ज्यादा ही समझ में आ गई होगी, यही तो इस कहानी का गुण है।

कहानी सुनाने के बाद मैं कहता हूं-आइए इस कहानी पर हम थोड़ी सी चर्चा करते हैं। चर्चा के लिए छोटे-छोटे पांच प्रश्न हैं, जिन्हें मैं यह कहानी सुनाते समय हमेशा साथ रखता हूं। ये प्रश्न इतने बढ़िया बने हुए हैं कि मुझे कभी इस कहानी पर चर्चा के लिए और प्रश्न बनाने की जरूरत नहीं पड़ी। बच्चों के लिए ही नहीं बड़ों के साथ भी, यानी शिक्षकों के समूहों के साथ चर्चा करते हुए भी और प्रश्न बनाने की जरूरत नहीं पड़ी। ये प्रश्न हमारे मित्र कमल जी ने, इस कहानी पर बच्चों के साथ चर्चा के लिए कभी बनाए थे। ये पांच प्रश्न इस तरह से हैं-

1 हाथी और महावत का आपस में क्या संबंध था?
2 कहानी में सबसे ताकतवर कौन था? कैसे?
3 सबसे कमजोर कौन था? कैसे?
4 महावत ने हाथी को क्यों मारा? क्या यह हिंसा रुक सकती थी?
5 ताकतवर अपने से कमजोर की बात नहीं समझता। इसके अपने आस-पास से कुछ उदाहरण बताएं।
6 इस कहानी को लेखक ने क्यों लिखा होगा?

हाथी और महावत में आपस में क्या संबंध था? इस प्रश्न के जवाब में बच्चों को थोड़ा वक्त लग जाता है। उनके साथ संबंध शब्द पर थोड़ी चर्चा करनी पड़ती है, कुछ उदाहरण देने पड़ते हैं। लेकिन बड़ों के समूह से बारिश के दिनों में जामुन के पेड़ से जामुन झड़ने की तरह टप-टप जवाब आने लगते हैं- 'महावत मालिक था और हाथी उसका एक तरह से मान लीजिए सेवक या नौकर।'

लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि महागिरी हाथी, इस महावत का नहीं था। हाथी तो एक व्यापारी का था। जिस महावत को आप महागिरी का मालिक कह रहे हैं, वह तो खुद एक व्यापारी का नौकर था। अब आप देखें कि कहानी में एक सेकण्ड के लिए भी उपस्थित न रहने वाला कोई एक व्यापारी है जो महावत और महागिरी दोनों का मालिक है। हमारे आस-पास की दुनिया इसी तरह के संबंधों से संचालित है। इतनी श्रेणियां है कि हर कोई किसी न किसी का नौकर है। कहीं बहुत घोषित तौर पर तो कहीं अघोषित तौर पर। नौकर अपने मालिकों के लिए महागिरी हाथी की तरह अलग-अलग प्रकार के श्रम करते हैं। श्रम करने के साथ-साथ वे अपने मालिकों की मूर्खताओं के चलते उतने ही उत्पीड़ित किए जाते हैं, जितना महावत के द्वारा महागिरी को उत्पीड़ित होना पड़ा। आपको याद होगा, महावत ने महागिरी को इतना पीटा था कि डण्डा टूट गया था। और जब इससे उसका प्रयोजन हल नहीं हुआ तो उसने अंतिम हथियार अंकुश-लोहे का छुरा- उठा लिया था और उससे हाथी को कोंचा था, इतनी तकलीफ दी थी कि हाथी को मजबूरन महावत को गिरा देना पड़ा।

चलिए छोड़िए उत्पीड़न के इस आख्यान को, आप यह बताइए कि कहानी में सबसे ताकतवर कौन था? जाने क्यों बड़े-बड़े शाला प्रभारी, प्रधानाचार्य तक इस सवाल से गफलत में पड़ जाते हैं। कोई कहता है हाथी सबसे ताकतवर था, उसने महावत को गिराकर फेंक दिया था, बड़े-बड़े लकड़ी के खम्भे उठाता था। कोई कहता-महावत सबसे ताकतवर था, वह हाथी जैसे बड़े जानवर को हांकता था। कोई तीक्ष्ण बुद्धि लगाकर कहता-व्यापारी सबसे ताकतवर क्योंकि वह हाथी और महावत दोनों का मालिक था। तो भाई क्या मालिक होना ताकतवर होना है? हां जी है, इसमें क्या शक है! इसका मतलब यह हुआ जो सब कुछ खरीद सकता है, वह सबसे ताकतवर है। खरीदने की क्षमता ही सबसे बड़ी ताकत है। तब फिर गांधी जी की ताकत क्या थी? या आइंस्टाइन की ताकत क्या थी? या मुंशी प्रेमचंद की ताकत क्या थी? क्या इनकी कोई ताकत नहीं थी। गांधी जैसा दार्शनिक राजनेता, आइंस्टाइन जैसा वैज्ञानिक, प्रेमचंद जैसा लेखक दुनिया को जो देता है, जिस रूप में प्रभावित करता है, उस ताकत को आप कैसे देखते हो? मुझे लगता है बुद्ध के पास करुणा की ताकत थी। अगर हम मानें कि केवल खरीदने की क्षमता या सत्ता या सैन्य बल ही ताकत नहीं है ताकत के दूसरे स्वरूप भी हैं। केवल शरीर की या सत्ता की ताकत को ताकत का एकमात्र रूप स्वीकारने की दिक्कत यह है कि फिर तो संसार में ताकतवर कहलाने के लिए या तो पहलवान बचेंगे या तानाशाह और उनको चुनौति देने वाली किसी ताकत को हम देखने से इंकार कर रहे होंगे तो यह कितना अजीब होगा? अब बताएं कि कहानी में सबसे ताकतवर कौन था? अब कुछ लोग बच्चों की कार्यशाला है तो कोई छोटी बच्ची और बड़ों का समूह है तो कोई

पतली-दुबली शिक्षिका अपनी पतली-दुबली आवाज में हमें बताती है- 'कहानी में सबसे ताकतवर महागिरी था क्योंकि उसने बिल्ली के बच्चे को बचाया था।' बिल्कुल ठीक बात। आपको याद होगा बिल्ली के बच्चे को बचाने के लिए ही महागिरी ने मर्मांतक उत्पीड़न झेला था। यह बात नहीं होती तो जितनी देर उसने कड़ी मार सही उतनी देर में वह सैंकड़ों ऐसे खम्भों को गढ्ढे में रोप सकता था। कहानी में सबसे ताकतवर महागिरी था, जानवर कहलाकर भी जिसके पास इंसानों से अधिक करुण हृदय था।

यहां बीच में क्षेपक की तरह मैं एक किस्सा सुना दिया करता हूं कि एक बार दिल्ली के किसी मैदान में कुश्ती का दंगल चल रहा था। कुश्ती के उस दंगल को देखने वालों में महात्मा गांधी भी मौजूद थे। सभी कुश्तियां हो चुकी थी। आखिरी कुश्ती भी जीती जा चुकी थी। आखिरी कुश्ती जीतने वाले पहलवान ने दंगल में चौतरफ अपना हाथ लहराते हुए चुनौति दी कि कोई और अपने बाजुओं में बल रखता हो, और मुझसे लड़ना चाहता हो, मेरे दांव अभी भी उसके लिए बचे हुए हैं, मैदान में आए और मुझसे मुकाबला करे। महात्मा गांधी अपनी जगह से खड़े हुए, मैदान में आए और बोले पहलवान से कि मैं तुमसे लडूंगा? पहलवान गांधी जी को अपने सामने पाकर चकरा गया उसकी बाजुओं का सारा बल काफूर हो गया। हाथ जोड़ लिए और कहने लगा-'महात्मा जी आपने इस देश से फिरंगी सरकार को उखाड़ फेंका। मेरी आपके सामने क्या बिसात![12]

कहानी में सबसे कमजोर कौन था? हमारे प्रिय शिक्षक फिर गफलत में पड़ जाते हैं वे तपाक से बोलते हैं कि बिल्ली का बच्चा। मानो उन्होंने अब तक ताकत पर हुई चर्चा से कुछ सबक ही न लिया हो। अरे! भाई मुझे बताओ बिल्ली के बच्चे को बिना सोचे समझे ही सबसे कमजोर क्यों कह रहे हो? उसने तो कुछ किया भी नहीं आपकी कहानी में। सिवाय एक गढ्ढे में पड़े रहते हुए आपकी दया पर निर्भर रहने के। बिल्ली का बच्चा कमजोर कैसे हुआ। क्या इसीलिए कि कहानी में सबसे छोटा प्राणी आपको बिल्ली का बच्चा ही नजर आया। इस तर्क से तो आप दुनिया के तमाम बच्चों को कमजोर ठहरा देंगे क्योंकि वे छोटे हैं। क्या आकार में छोटा होना अपने आप मे कोई दोष है? इस तर्क से आप ऐसी दुनिया की वकालात करने जा रहे हैं जिसमें लम्बे या मोटे हैं वे ताकतवर और कम लम्बे और कम मोटे हैं, वे कमजोर। यह आपका कैसा न्याय है? तब लगता है कि नहीं बिल्ली के बच्चे को छोड़ो, उसे कमजोर मत कहो, हाथी को कमजोर कहो क्योंकि हाथी महावत की मार खाता है। तुरंत लगता है कि नहीं, नहीं हाथी पर तो बात हो चुकी है। वह तो अभी-अभी सबसे अधिक ताकतवर सिद्ध हो चुका है। तो फिर महावत सबसे कमजोर था, उसे हाथी को पीटने की क्या पड़ी थी।

क्यों भाई महावत तो अपना काम कर रहा था। हाथी को हांकना ही उसका कर्तव्य था। और अपने कर्तव्य के लिए वह साम, दाम, दण्ड, भेद सबका इस्तेमाल कर रहा था। उस बेचारे को भला कमजोर क्यों कहते हो? प्रिय पाठक आप कतई आश्चर्य न करें क्योंकि यह एक से ज्यादा बार शिक्षक समूहों की ओर से जवाब आया है कि डण्डा सबसे कमजोर था क्योंकि वह टूट गया। क्या अब भी आप इस चर्चा में दिलचस्पी रखेंगे। चलिए आगे बढ़ते हैं, मान लिया कि महावत सबसे कमजोर था, क्योंकि उसने बिना कारण जाने महागिरी को पीटा।

क्या यह हिंसा रुक सकती थी?

हां, अगर महावत ने नीचे उतरकर गढ्ढे में देख लिया होता तो यह हिंसा रुक सकती थी। दुनिया में अधिकांश हिंसा का कारण यही है कि हिंसा करने वाले नहीं जानना चाहते कि वे जिन पर हिंसा कर रहे हैं, उनका भी कोई पक्ष हो सकता है। और ताकतवर कभी भी अपने व्यवहार के कारणों की पड़ताल नहीं करना चाहते, क्योंकि वे ताकत में हैं। उत्पीड़क हैं, उत्पीड़ित नहीं।

ताकतवर अपने से कमजोर की बात नहीं समझता। इसके अपने आसपास से कुछ उदाहरण बताएं।

अब तक चर्चा चूंकि इतनी गर्म हो चुकी होती है कि शिक्षकों को एक नहीं सैकड़ों विभागीय उदाहरण याद आने लगते हैं कि अधिकारी उनकी बात कहां सुनते हैं!? उन्हें एक बार भी शायद यह याद नहीं आता कि घर में और कक्षा में वे खुद भी ताकतवर हैं और पत्नी और बच्चों की बात नहीं सुनते हैं।

इस कहानी को लेखक ने क्यों लिखा होगा?

इस प्रश्न के जवाब में मैं इतना ही कहूंगा कि इस चर्चा को हमने क्यों किया होगा? शायद ऐसे ही किसी कारण से इस कहानी को लिखा गया होगा।

कहानी पर चर्चा के लिए प्रश्नों की अच्छी तैयारी की बात हम कर चुके हैं। प्रश्नों के प्रकार पर विस्तार से चर्चा फिर कभी, फिलहाल संक्षेप में इतना ही कि प्रश्न केवल जानकारी या सूचनापरक ही न हों, केवल पाठ आधारित ही न हों। प्रश्न ऐसे भी हों जो बच्चों को कल्पनाएं करने की ओर ले जाएं। अनुमान लगाने की ओर ले जाएं। प्रश्न ऐसे हों जो बच्चों को विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने की ओर प्रेरित करें। ताकि बच्चों की तार्किकता का, चिंतन क्षमता का विकास हो सके। प्रश्न ऐसे हों जो बच्चों के अनुभव संसार से जुड़े हों ताकि बच्चे जवाब देने के लिए उत्सुक हो सकें। और एक सबसे बड़ी बात यह कि प्रश्न बनाते समय किसी प्रश्न को बनाकर हम खुद उसके संभावित जवाबों पर विचार कर लें। बल्कि अपने मन में सवाल का पूरा जवाब दे लें। कई बार प्रश्न इतनी जटिलता धारण कर लेते हैं कि सुनने वाले को समझ में ही नहीं आता कि आखिर पूछा क्या जा रहा है। प्रश्न की भाषा को अच्छी तरह से देखें लें, उसे साफ-सुथरा कर लें। उलझी हुई भाषा, उलझे हुए विचारों की सूचक है। और अनेक बार प्रश्न करने वाले बखूबी उलझे हुए विचारों वाले हो सकते हैं। ◆

लेखक परिचय : राजस्थान के जाने-माने युवा कवि हैं। एकलव्य, भोपाल; रूम टू रीड, इण्डिया एवं अन्य प्रकाशनों से बच्चों के लिए कविता एवं कहानियों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं।

संदर्भ

1. कहानी कहां खो गई? - दीवार का इस्तेमाल-कृष्ण कुमार, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
2. तोते की शिक्षा-रवीन्द्रनाथ टैगोर, रवीन्द्र नाथ का बाल साहित्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
3. मरता क्या न करता- के. शिवकुमार द्वारा प्रस्तुत केरल की लोक कथा, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
4. भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?- कांता ग्रेबां, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
5. महागिरी-हेमलता, सीबीटी, नई दिल्ली
6. हाथी की हिचकी-जेम्स प्रेलर, एकलव्य के लिए, स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित
7. दयालु गाड़ीवान और चालाक मगरमच्छ- प्राथमिक शिक्षा के मुद्दे, जनवरी-अप्रैल 2000
8. बताओ मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं (गैस हाउ मच आई लव यू) - सैम मैक ब्रिटनी, स्कॉलास्टिक इण्डिया
9. ईदगाह-मुंशी प्रेमचंद, एनबीटी, नई दिल्ली
10. आशा अमरधन - विजयदान देथा, संचयन, साहित्य अकादमी नई दिल्ली
11. पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ-एलिस मकलेरन, अनुवाद - अरविन्द गुप्ता, तूलिका प्रकाशन
12. महात्मा गांधी और कुश्ती के दंगल का किस्सा- दिल्ली जो एक शहर है- महेश्वर, अनुवादक- नूर नवी अब्बासी, हिन्दी अकादमी, दिल्ली